फरवरी २०१५

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

आरती

अनुक्रमणिका

३ ज्ञानी कहते हैं...

६ यह तो नई ही बात!

४ घर पर आरती करने का क्या महत्व है?

१० मीठी यादें

१२ चलो खेलते हैं।

११ बच्चों के साथ नीरू माँ

१४ मनपसंद कहानियाँ

१८ आरती के बारे में पुरानी मान्यता

१६ ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक: ११
अखंड क्रमांक: २३
फरवरी २०१५

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१,
गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website:
kids.dadabhagwan.org

आरती

संपादकीय

बालमित्रों,

बचपन से ही हम अपने घर या मंदिर में रोज़ आरती होते हुए देखते हैं। सभी कितने भाव से भगवान की आरती करते हैं!

लेकिन कभी सोचा है कि भगवान की आरती रोज़ करने से क्या फायदा होता है? क्या सचमुच इसका कोई लाभ है या फिर आदत या प्रथा के कारण लोग आरती करते रहते हैं? अपने व्यस्त समय (बिज़ी शिड्यूल) से रोज़ आरती के लिए समय निकालना कितना ज़रूरी है?

तो आइए देखें कि परम पूज्य दादाश्री आरती के लिए क्या कहते हैं? मुझे विश्वास है कि इस अंक के पढ़ने के बाद आप भी रोज़ आरती करने लगोगे या फिर आरती रोज़ करनी चाहिए ऐसे भाव तो करने ही लगोगे।

- डिम्पल महेता

अक्रम एक्सप्रेस

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : आरती क्या है?

दीपकभाई : आरती शब्द आरत पर से आया है। आरत यानी श्रद्धा, भावना प्रज्वलित करना। इस प्रकार, जिसे गाने से श्रद्धा उत्पन्न हो उसे आरती कहते हैं।

महान पुरुषों की आराधना, भक्ति, कीर्तन सामान्य इंसान कैसे कर सकते हैं? इसीलिए कवि हो या भक्त हो, वे भगवान की आराधना हो इसलिए उच्च प्रकार के शब्द आरती के रूप में लिखते हैं। फिर सभी लोग गाते हैं। गाने से धीरे-धीरे उनकी तरह बनते जाते हैं। जितनी श्रद्धा से भक्ति करता है उतना उसे परिणाम मिलता जाता है। नियम क्या है कि जिनकी आराधना करते हैं खुद उन्हीं के जैसे बनते जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : किसी भी भगवान की या दादा भगवान की जो आरती करते हैं, तो मोक्ष के लिए उसकी क्या आवश्यकता है?

दादाश्री : मोक्ष हेतु जो कुछ भी किया जाता है वह आत्मा की पुष्टि के लिए है। दादा भगवान वे तो ज्ञानीपुरुष है, वह अपना खुद का ही आत्मा है। इसलिए दादा भगवान का जो कुछ भी करोगे वह अपने आत्मा के लिए किया बराबर है। जिन्हें कुछ भी नहीं चाहिए, उनकी सेवा-पूजा-आरती करने से बहुत लाभ मिलता है। जिनकी एक बार आरती करने से मोक्ष मिलें ऐसे ज्ञानीपुरुष की कभी कभार आरती करेंगे तो बहुत हो गया। भीतर एकदम शांति हो जाती है। जब आप दादा भगवान की आरती करते हो उस समय "हम" भगवान के साथ एकाकार होते हैं।

प्रश्नकर्ता : अपने मंदिर में सीमंधर स्वामी की आरती करने का क्या प्रयोजन है?

दादाश्री : जो भगवान अभी ब्रह्मांड में हाज़िर हैं, उनकी आरती करते हैं। वे मेरे थ्रू(माध्यम द्वारा) करते हैं और उस आरती को मैं उन्हें पहुँचा देता हूँ। मैं भी उनकी आरती करता हूँ। यह भगवान की आरती है इसलिए भगवान खुश हो जाते हैं। क्योंकि उसमें उसका विनय गुण दिखता है। उसका भगवान की तरफ लगाव देखते हैं। भगवान को आरती की ज़रूरत नहीं है, भगवान तो भगवान ही हैं।

पूरा ब्रह्मांड प्रकाशमान हो, ऐसी यह आरती हो रही है। जिन्हें वहाँ रहते हुए ठेठ केवलज्ञानियों देख सकते हैं, तीर्थंकर देख सकते हैं। आरती के समय आप सभी पर जो फूल चढ़ाए जाते हैं, वे सभी हमने देवों पर चढ़ाए हुए होते हैं और फिर आप लोगों पर चढ़ाते हैं। दुनिया में किसी पर भी देवों पर चढ़ाए गए फूल नहीं चढ़ते, ये तो आप पर ही चढ़ते हैं। उसमें दैवी शक्तियाँ रखी(भरी) हुई होती हैं। अभी सभी के मन बदल गए होते हैं तो फिर इसमें से शक्तियाँ मिलती रहती हैं। इससे मोक्ष तो होता है और संसार में विघ्न भी नहीं आते।

दादा की आरती तीर्थंकरों तक, पंच परमेष्टि भगवंतों तक पहुँचती है। यदि यह आरती ठीक से बोली जाए न तो दादा घर में हाज़िर होंगे। और दादा हाज़िर होंगे तो सभी देवलोक भी हाज़िर हो जाते हैं। और सभी देवों की कृपा रहती है और कृपा होने से कोई परेशानी नहीं आती।

घर पर आरती करने का क्या महत्व है?

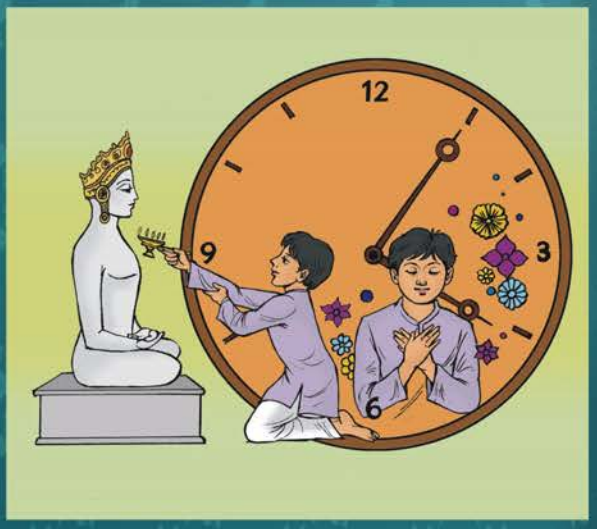

आरती करने से आपका मन एकाग्र रहता है और पूरे दिन शांति रहती है। यह सब तो नकद फल देनेवाला है। यह सब जितना ज्यादा करोगे उतना ज्यादा फायदा। घर पर आरती नियमित रूप से करने के लिए एक निश्चित समय तय करके रखोगे तो बहुत ही अच्छा।

घर में सिर्फ एक ही क्लेश हो तो वातावरण पूरा बिगड़ जाता है। लेकिन आरती करने से क्या होता है? सभी को उच्च संस्कार मिलते हैं। वातावरण सुधर जाता है और साफ-पवित्र हो जाता है।

नियमित रूप से आरती की जाए तो बच्चों में, बाकी सभी में कुछ बदलाव आ जाता है! फिर बच्चों के मन अच्छे रहते हैं। जो बच्चे अकुलाहट में रहते हैं, उन बच्चों का क्या? इस गर्मी से अकुलाहट और बाहर का कुसंग, कुचरित्र के ही विचार आते रहते हैं। उसमें ये आरती ठंडक देती है, उन विचारों को उड़ा देती है। बचाने का साधन है यह।

जिनके घर दादा की आरती होती है उनके वहाँ का पूरा वातावरण ही बदल जाता है, पवित्र हो जाता है। बाहर कलियुग का, दुषमकाल का वातावरण हैं, वह अपने घर नहीं आ जाता। इस आरती में इतना पावर है कि दुषमकाल के वातावरण को घर में नहीं आने देता। पूरे दिन घर के सभी लोग परमानंद में रहते हैं।

प्रसाद या थाल आरती में क्यों रखा जाता है?

दादाश्री : हमें संसार में मुश्किलें आती हैं तो वे सब दूर हो जाती हैं।

यह तो नई

जब हम समूह में आरती करते हैं तब कई लोग बातें करते हैं, इसे ज्ञान की विराधना कही जाएगी, सत्संग की विराधना कही जाएगी। आरती के समय कुछ ऐसा-वैसा किया तो विराधना हो गई। आज तक यहाँ कुछ भी विराधना की हो तो उसकी माफी माँग लेना...

ही बात!

यह तो गंगाजी का पानी है। जितना नहाओगे, जैसे गंगाजी शरीर का मेल साफ करती है, उसी तरह यहाँ मन का, बुद्धि का सारा मेल साफ हो जाता है।

आरती किस की करनी चाहिए?

- जिनमें क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं हों, उनकी आरती करनी चाहिए। हम गाली दें फिर भी वे क्रोधित नहीं हो बल्कि आशीर्वाद दें, उनकी आरती करनी चाहिए।

- इसलिए किसी भी व्यक्ति की आरती नहीं की जाती। सिर्फ ज्ञानीपुरुष की ही करनी चाहिए।

यह तो नई

ही बात!

आरती के समय, घंटा या घंटी क्यों बजाई जाती है?

आरती, स्तुति-प्रार्थना एकाग्रता और भाव से हो और उस समय बाहर का कोई आवाज़ सुनाई न दें इसलिए साथ में घंटी बजाई जाती है।

जब हम भगवान की आरती करते हैं तब मूर्तियाँ भी बोलने लगती है। ज्ञानीपुरुष मतलब कैसे? पत्थर की मूर्तियाँ भी बोलने लगें वैसे ज्ञानीपुरुष। आरती में सभी देव हाज़िर होते हैं। अपनी आरती चाहे जिस मंदिर में गाओ, भगवान को हाज़िर होना पड़ता है।

मीठी यादें

एक बार दादा पैंतीस-चालीस महात्माओं को लेकर महेसाणा सीमंधर स्वामी के जिनालय में गए। वहाँ के पुजारी ने दादा से कहा, "दादाजी आज आप आरती कीजिए।" दादा बोले, "हम ज़रूर करेंगे लेकिन ये सब हमारी आरती बोलेंगे, आपकी आरती नहीं बोलेंगे।" पुजारी ने कहा, "हमारी आरती तो रोज़ बोलते ही हैं, लेकिन आज आपकी आरती बोलिए।" फिर वहाँ उन्होंने सीमंधर स्वामी की आरती उतारी। दादा ने खुद स्वामी की आरती उतारी।

फिर तो बात ही क्या करनी? कौन, किसकी आरती कर रहा था। आरती करनेवाला ब्रह्मांड का नाथ था, मालिकी बिना का। किसी भी तरह की मालिकी नहीं हो, ऐसे ब्रह्मांड के नाथ बैठे थे।

... और फिर प्रभु के नेत्रों में से अमृत धारा हुई। दादा को तो पता चल गया कि सीमंधर स्वामी भगवान की आँखों से अमृत बिंदु टपक रहे हैं। लेकिन वे कुछ नहीं बोले।

फिर दादा निवास पर वापस आए। थोड़ी देर बाद पुजारी दौड़ते-दौड़ते कहने आए, "साहब आज आपने क्या चमत्कार किया कि भगवान की मूर्ति में बहुत बदलाव आ गया। कभी भी भगवान की आँखों से आँसू नहीं गिरे। उनकी प्रतिष्ठा होने के बाद आज ऐसा हुआ। आपने ऐसा तो क्या किया कि भगवान की आँखों से अमृत गिर रहा है। हमने कभी ऐसा नहीं देखा। आपने आरती करते समय क्या चमत्कार किया?"

मैंने कहा, "हमने कोई चमत्कार नहीं किया। हमने सहज आरती की उसमें ऐसा हुआ।"

दादा ने कहा, "ऐसा जो होता है। यह साइन्टिफिक नहीं है, लेकिन यह देवों का काम होता है। हमारी आरती में देवता हाज़िर होते हैं, लेकिन आपको नहीं दिखाई देंगे। देवता सूक्ष्म रूप में आते हैं और सूक्ष्म रूप से काम करते हैं।"

देखा आरती का महत्व!

बच्चों के साथ नीरू माँ

प्रश्नकर्ता : कई बार हम लोग दादा की आरती घर पर करते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि उस समय हमारा माइन्ड किसी और जगह चला जाता है। तो क्या करना चाहिए?

नीरूमाँ : ज़ोर-ज़ोर से बोलो और दादा की फोटो के सामने देखो, सीमंधर स्वामी के सामने देखो। ये सब उपाय कर सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : घर में कई बार मम्मी कहती है कि तू दादा की आरती कर और मुझे करना अच्छा नहीं लगता, बोरियत होती है। मैं उन्हें सच-सच कह देती हूँ कि मुझे बोरियत होती है। बुद्धि ऐसा बताती है कि ये वापस क्रमिक में ले जा रहे हैं।

नीरूमाँ : ऐसा नहीं है। दादा ने तो कहा था कि जिस घर में आरती होगी उस समय हम वहाँ ज़रूर हाज़िर हो जाएँगे, यह क्रमिक नहीं है। क्रमिक में तो भगवान बैठे हैं उनकी आरती करते हैं। और अक्रम में तो हमें यह सुविधा होती है?

समझो कि सीमंधर स्वामी की आरती करते हैं, तब सीमंधर स्वामी अलग और उनके भीतर केवलज्ञान स्वरूप परमात्मा अलग। और फिर आरती करनेवाले तुम अलग और तुम्हारे केवलज्ञान स्वरूप परमात्मा अलग। मतलब मैं और भगवान एक ही हैं और यह पुद्गल(शरीर) पुद्गल का कर रहा है। और आत्मा आत्म भाव से एकाकार होकर करता है।

उसी तरह दादा भगवान की आरती की जाती है, ये फोटोवाले दादा भगवान की आरती नहीं करते। उनके अंदर प्रकट हुए परमात्मा की, शुद्धात्मा की करते हैं। और वह मेरा ही आत्मा है।

इसलिए यहाँ जो कुछ भी किया जाता है, आरती या दीया, हम अपने खुद के आत्मा की ही करते हैं। ये तो प्रतीक रखे हैं। हम अपनी खुद की आरती तो नहीं ही करेंगे न। इसलिए मेरा स्वरूप और इनका स्वरूप एक ही है, यह समझ अंदर रखकर आरती करनी चाहिए। इस तरह करोगे न, तो देखना भीतर ज़बरदस्त आनंद आएगा। बोरियत तो इसलिए होती है कि ये सेट नहीं किया है। सबकुछ मिकेनिकल करते हैं। बिना समझे। इस तरह सेट करके करेंगे कि यह तो मेरे अंदरवाले की ही आरती कर रहा हूँ। तो भीतर बहुत आनंद आएगा। अलग हो जाएगा और कॉन्सनट्रेशन पावर (एकाग्रता की शक्ति) भी बहुत बढ़ जाएगी।

१. चलो बच्चों इस चित्र में कितनी बार २०१५ हैं उसकी गिनती करें।

६	४	२	०	१	५	२	२	४	६
५	८	२	९	४	५	१	०	२	५
१	७	०	२	०	१	५	१	१	९
०	३	१	१	५	१	५	५	५	५
२	४	५	१	०	२	१	६	१	२
३	२	०	१	५	५	०	१	०	०
२	२	०	५	५	१	२	१	२	१
०	२	०	१	५	५	१	०	५	५
१	४	६	०	५	०	०	८	१	८
५	३	२	२	०	१	५	५	५	५

चलो खेलते हैं।

२. दर्शाए हुए चित्र को घटना क्रम अनुसार नंबर दीजिए।

बेकर बिस्कुट का मिश्रण बनाता है।

बिस्कुट तैयार हैं।

उसने ऑवन में ट्रे लगाई।

बच्चे बिस्कुट खा रहे हैं।

उसने बीबा में मिश्रण भरा।

३. दिए हुए उदाहरण के अनुसार गिनती करो।

२ × ५ = १०

__ × __ = __

__ × __ = __

__ × __ = __

__ × __ = __

__ × __ = __

__ × __ = __

मनपसंद

पूज्य श्री, आरती क्यों करनी चाहिए?

जिस घरमें आरती हो, उस
घरमें कभी भी झगड़ा नहीं होगा।

दूसरे दिन,

चलो, आज हम सब
आरती करते हैं।

हाँ, हम आरती की
थाली सजाकर लाते हैं।

कहानियाँ

हमें दो।

सभी बारी-बारी से
आरती करते हैं।

पूज्य श्री, आरती लीजिए।

हमें बहुत मज़ा आया। अभी से
हम हर रोज़ आरती करेंगे।

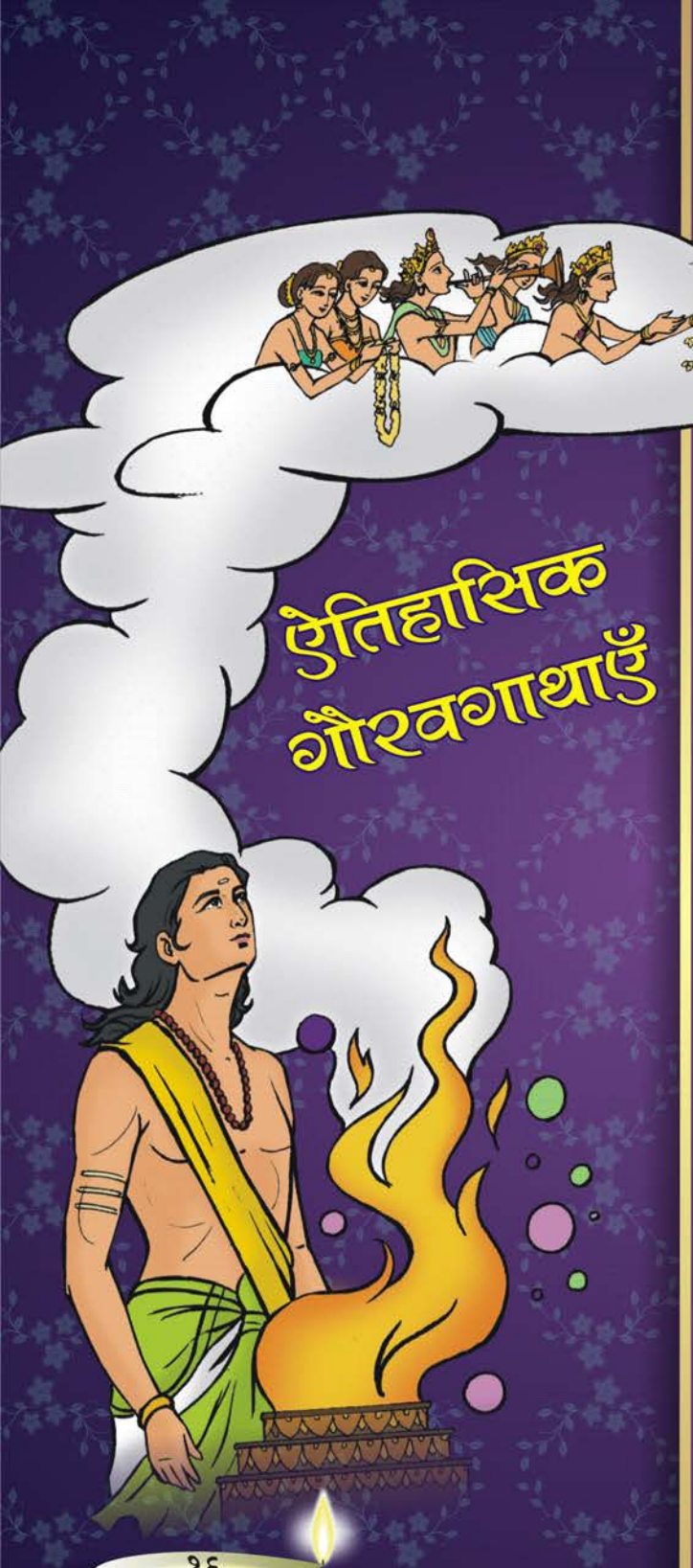

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

ई.स. पहले ६०७ की बात है। भारत के मगध राज्य के गोबर गाँव में वसुभूति और पृथ्वी गौतम नामक ब्राह्मण पति-पत्नि रहते थे। उनके इंद्रभूति, अग्निभूति और वायुभूति तीन बेटे थे। तीनों बेटे बचपन से ही वेद में पारंगत थे और यज्ञ आदि अच्छी तरह करवाते थे। हर एक के ५०० अनुयाई थे।

एक बार, पास के अपापा गाँव में सोमिल नामक ब्राह्मण के यहाँ पवित्र यज्ञ का आयोजन हुआ था। यज्ञ के लिए ४०४ ब्राह्मण और ११ वेद पारंगतों को बुलाया था। इंद्रभूति गौतम ग्यारह में से एक तेजस्वी ब्राह्मण थे। पूरे यज्ञ की विधि का संचालन उन्हें करना था।

इस यज्ञ में भेड़-बकरियों की आहुति होनेवाली थी इसलिए पूरा नगर रोमांचित था। इतने में उनकी नज़र आकाश की तरफ गई। स्वर्ग से देवी-देवता उस तरफ आ रहे थे। इंद्रभूति मन ही मन खुश हो रहे थे कि इस यज्ञ के लिए लोग मुझे सदियों तक याद करेंगे। उन्होंने लोगों से गर्व से कहा, "देखो आकाश मार्ग से देवी-देवता अपने यहाँ यज्ञ में आ रहे हैं।" सभी आकाश की ओर देखने लगे।

सभी के आश्चर्य के बीच देवी-देवता उनकी यज्ञ भूमि के पास रुकने के बजाय, महासेन जंगल की तरफ चले गए। इंद्रभूति के पता लगाने पर मालूम हुआ कि हाल ही में केवलज्ञान प्राप्त किए महावीर स्वामी देशना देनेवाले हैं।

देवी-देवताओं ने उनके यज्ञ को प्रधानता नहीं दी इसलिए वे चिढ़ गए। वे गुस्से में सोचने लगे, "ये महावीर हैं कौन जिन्हें अपना व्याख्यान देने लायक भी संस्कृत भाषा नहीं आती?"

उन्होंने तय किया कि मैं महावीर के साथ वाद-विवाद करूँगा और उन्हें हराऊँगा। इस तरह मैं अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करूँगा। ऐसा सोचकर वह ५०० शिष्यों के साथ महावीर की सभा में गए।

इंद्रभूति के सभा में आते ही भगवान महावीर ने उनका नाम लेकर स्वागत किया। इससे पहले भगवान महावीर इंद्रभूति से कभी नहीं मिले थे। इंद्रभूति कुछ क्षण के लिए झेंप गया। लेकिन फिर सोचा, "मैं तो प्रखर पंडित हूँ इसलिए मुझे तो सभी पहचानेंगे ही न।"

उसके बाद भगवान महावीर ने इंद्रभूति के मन में चल रहे आत्मा से संबंधित सभी संशय एक के बाद एक कहकर बताए।

महावीर ने कहा, "इंद्रभूति, तुम्हें आत्मा के अस्तित्व के लिए शंका है? आत्मा है ही और वह शाश्वत है..." इस तरह भगवान महावीर ने हिंदू वेद के कई उदाहरण देकर आत्मा के अस्तित्व की शंका को निर्मूल किया।

इंद्रभूति तो भगवान महावीर के वेद आदि के ज्ञान को देखकर चौंक ही गए। वे जागृत हुए और उन्हें समझ में आया कि वे अपने आप को महान पंडित मान रहे थे। लेकिन वे अपूर्ण ही थे। और उसी समय वे भगवान महावीर के पहले पट्ट शिष्य बन गए।

उस समय इंद्रभूति ५० साल के थे और गौतम वंश के होने की वजह से गौतम स्वामी कहलाए।

दूसरी तरफ, सोमिल और अन्य दस पंडित, इंद्रभूति विजयी होकर वापस ही लौटेंगे। उसका आतुरता से इंतज़ार कर रहे थे। लेकिन इंद्रभूति महावीर के शिष्य बन गए हैं, ऐसे समाचार मिलते ही सभी आश्चर्यचकित हो गए। बाकी के दस विद्वान भी महावीर को हराने की इच्छा से वाद-विवाद के लिए गए। वे भी महावीर के शिष्य बन गए। इस घटना के बाद सोमिल ने यज्ञ की विधि रद्द कर दी और सभी पशुओं को छोड़कर वहाँ से खिन्न मन वापस लौट गया। ये ग्यारह विद्धान ही भगवान के मुख्य शिष्य बने। बाद में वही ग्यारह गणधर कहलाए।

...क्रमशः

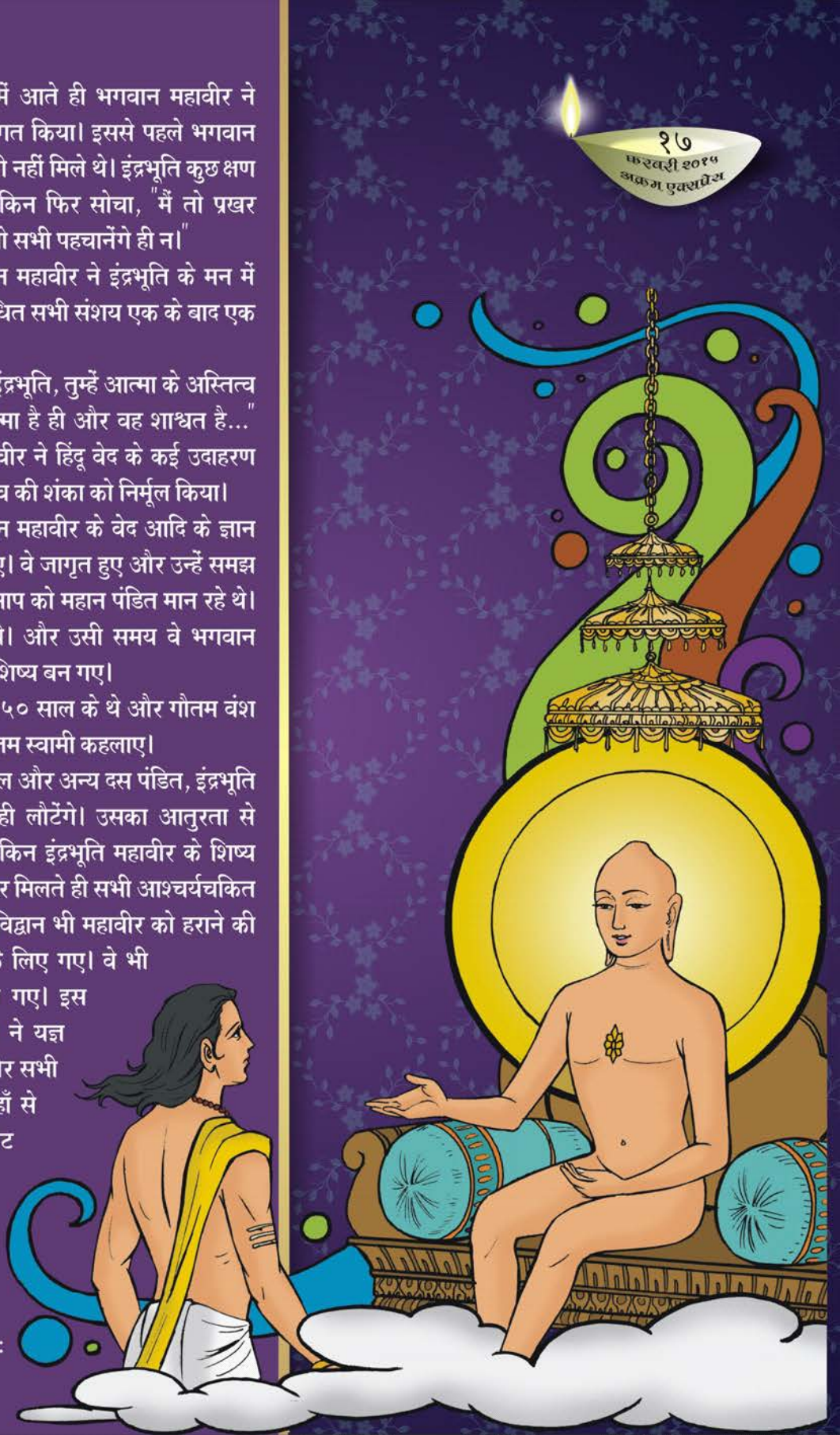

आरती के बारे में पुरानी मान्यता

आरती के बारे में ऐसा कहा जाता है कि पूर्व आदिमानव गुफा में रहते थे। गुफा मतलब घोर अंधकार। गुफा में यहाँ वहाँ सभी जगह अंधकार का ही साम्राज्य होता है। आदिमानव भी भगवान के प्रति आस्था रखते थे। गुफा में भगवान की मूर्ति रखते और पूजते भी थे।

लेकिन गुफा के घोर अंधकार में भगवान की सेवा-पूजा करने के लिए जंगल से करगठिया बीनकर उनसे रोशनी करते थे। इससे गुफा का उतना अंधेरा दूर हो जाता। लेकिन जब भगवान के दर्शन करने हों तब पूरा तापना हाथ में लेकर, भगवान की मूर्ति के सामने लाकर, मूर्ति के चारों तरफ घुमाकर तापना की रोशनी में मूर्ति को देखकर खुश होते और दर्शन का सुख लेते। ऐसे, शायद यही आज की आरती का पूर्वज होगा।

और एक अन्य बातों के अनुसार पुराने मंदिरों के गर्भगृह में अक्सर अंधेरा रहता। उस समय भगवान के दर्शन करने के लिए दीपक जलाकर उसकी ज्योति से भगवान के दर्शन करते। और समग्र मूर्ति को देखने के लिए दीपक को चारों तरफ घुमाते और किसी खास समय बहुत से भक्त इकट्ठे होते तब सभी को सामूहिक दर्शन हो जाएँ इसलिए दीपक जलाकर दर्शन करवाते। और ऐसे क्रमशः समयांतर में वह आरती के रूप में बन गया होगा।

पज़ल के उत्तर

१.

२	×	८	= १६
२	×	६	= १२
२	×	३	= ६
३	×	४	= १२
३	×	७	= २१
२	×	२	= ४

२.

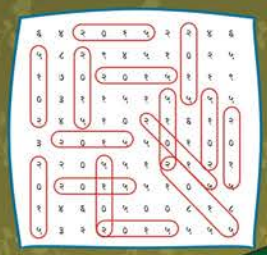

३.

हा....हा....ही....ही....

एक प्रदर्शन के प्रवेश द्वार पर बोर्ड था। मुफ्त प्रवेश। बंता कंजूस तो प्रदर्शन में घुस गया। उसने चारों ओर घुमकर प्रदर्शन देखा। उसे बहुत मजा आया और नया-नया जानने मिला। जब वह बाहर निकलने के लिए दरवाज़े के पास आया तब वहाँ पर बोर्ड था कि बाहर निकलने के लिए एक रुपया।

हा....हा....ही....ही...

छगन उसके चीनी दोस्त को मिलने के लिए होस्पिटल में गया।

चीनी दोस्त : "चीन, युन यान" उतना बोलकर मर गया। दोस्त के अंतिम शब्द क्या थे उसे जानने के लिए छगन चीन गया और उस शब्द का अनुवाद पूछा। अनुवाद होता था। "तू मेरी ओक्सिजन की नली पर खड़ा है।"

हा....हा....ही....ही....

हा....हा....ही....ही....

एक बार शांता और बंता घूमने निकले। तभी शांता को १००० रूपए की नोट मिली। इसे देखकर बंता बोला चल हम दोनों फीफ्टी-फीफ्टी कर लेते हैं।

शांता : वह तो सब ठीक है लेकिन बाकी के ९०० रूपए का क्या?

Akram Express

February 2015
Year : 2, Issue : 11
Conti. Issue No.: 23

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

"कार टून" कहानियाँ और "दादा भगवान" सचित्र भाग-५ का ओपनिंग करते हुए पूज्य श्री।
सीमंधर सिटी में आयोजित छोटे सीमंधर स्वामी की प्राण प्रतिष्ठा
महोत्सव में विविध भगवान के प्रक्षाल और पूजा करते हुए छोटे बच्चे।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २. पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta,
Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published
at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.